



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बंजर भूमि की विकराल होती चुनौती और इसका मुकाबला करने का उपाय

Vishnu Kumar Soni

Research Scholar, Department of Geography, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan

परिचय :- किसान के लिए मिट्टी की अहमियत वैसी ही है, जैसी इन्सान के शरीर में हड्डियों की ताकत। यानी जैसे दमदार हड्डियों के बगैर शरीर और सेहत शानदार नहीं हो सकती हैं, वैसे ही उपजाऊ मिट्टी के बगैर खेती अच्छी नहीं हो सकती है। इसके बावजूद भी जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरण के अन्धाधुन्ध दोहन की वजह से उपजाऊ मिट्टी वाले खेतों का इलाका तेजी से घटता जा रहा है।

उपजाऊ मिट्टी के बंजर में परिवर्तित होने का सबसे घातक प्रभाव किसानों पर पड़ता है। भले ही इसके लिए समाज के अन्य वर्ग कहीं ज्यादा जिम्मेदार हो। वैज्ञानिकों का समुदाय और सरकारों की ओर से किसानों को बंजर होती जमीन के बढ़ते प्रकोप से उबारने में मदद तो की जा सकती है, लेकिन बंजर जमीन को सुधारकर उसे फिर से कृषि योग्य भूमि में बदलने का सबसे बड़ा दारोमदार किसान पर ही रहेगा।

औद्योगिक क्रांति के पश्चात बंजर भूमि के क्षेत्र में वृद्धि :-

औद्योगिक क्रांति के बाद से अब तक विश्व की कुल कृषि योग्य भूमि का काफी हिस्सा अनुपजाऊ हो चुका है। इसके अलावा मिट्टी में नमी की मात्रा लगातार घट रही है, जिससे जमीन शुष्क एवं अनुपजाऊ हो रही है। विशेषज्ञों के अनुसार इस दशा के पीछे दुनिया भर में कम तथा अनियमित बारिश का होना है। आंकड़े बताते हैं कि पिछली दो से तीन सदी में दुनिया भर में बारिश की कुल मात्रा में 72 प्रतिशत तक की कमी आई है। विकासशील देशों के लिए ऐसी वैश्विक परिस्थितियाँ बेहद चिन्ताजनक हैं, क्योंकि दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी एशिया तथा अफ्रिका के उन इलाकों में बसती है, जहाँ मरुस्थलीकरण की आशंका ज्यादा देखी जा रही है।

मरुस्थलीकरण की दशा तब और चिन्तजनक हो जाती है, जब हम पाते हैं कि दुनिया में मानव की आबादी 8 अरब से ज्यादा हो चुकी है। इसके अभी और बढ़ते जाने का अनुमान है। इसका मतलब यह है कि इंसान को सिकुड़ती जमीन के बीच अपनी बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए भोजन जुटाने के लिए प्रयास करना होगा। भोजन की इसी चुनौती का सामना करने के लिए जहाँ एक ओर खेती की ऐसी उन्नत तकनीकों को विकसित करने पर जोर है, जिससे पैदावार बढ़ाई जा सके, वहीं दूसरी ओर उपजाऊ खेतों के बंजर बनने की रफ्तार को रोकने की भी जरूरत है।

भारत में बंजर भूमि :-

जमीन के बंजरपन या मरुस्थलीकरण की समस्या भारत में भी तेजी से बढ़ रही है। देश की मरुस्थली भूमि अब बढ़ते-बढ़ते 30 प्रतिशत हो चुकी है। देश की कुल अनुपजाऊ भूमि का 82 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, जम्मू कश्मीर, कर्नाटक, झारखण्ड, ओडिशा, मध्यप्रदेश तथा तेलंगाना राज्यों में है। लिहाजा इन्हीं राज्यों में बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का काम सबसे ज्यादा करने की जरूरत है।

मरुस्थलीकरण जमीन के खराब होकर अनुपाऊ हो जाने की प्रक्रिया है, इसमें जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय गतिविधियों समेत अनेक कारण हैं। घास के मैदानों में अत्यधिक चराई उत्पादकता व जैव विविधता को कम करती है, तो दूसरी ओर वनों की कटाई से ग्रीन हाऊस गैसों के प्रभाव में वृद्धि होती है। इन सभी के सामुहिक प्रभाव की वजह से मिट्टी की सबसे उपरी उपजाऊ परत के क्षय होने का खतरा बढ़ जाता है।

विश्व में बंजर भूमि :-

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में हर साल करीब 24 अरब टन उपजाऊ मिट्टी बर्बाद हो जाती है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट का मानना है की मृदा की गुणवत्ता में क्षति होने के कारण राष्ट्रीय घरेलू उत्पादन (GDP) की दर में हर साल 8 प्रतिशत तक गिरावट आने की आशंका है। एक अन्य शोध के अनुसार दुनिया की 83 करोड़ हैक्टेयर से अधिक भूमि खारेपन से प्रभावित है। विश्व की कुल भूमि का 9 प्रतिशत है जो भारत के क्षेत्रफल का लगभग 4 गुना है।

मिट्टी के खारेपन से पेड़ पौधे बहुत प्रभावित होते हैं। इसी खारेपन की वजह से मरुस्थल एवं बंजर जमीन में नमी की मात्रा कम हो जाती है, तथा वाष्पीकरण भी ज्यादा होता है। क्योंकि मिट्टी में नमी को सोखने तथा सहेजकर रखने की क्षमता घटती जाती है। मिट्टी में अम्लता एवं क्षारीयता के कारण मौजूद पोषक तत्व बर्बाद होने लगते हैं, इससे जीमन धीरे-धीरे बंजर बन जाती है।

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से बंजर भूमि में वृद्धि :-

रासायनिक उर्वरकों में मिट्टी की अम्लता बढ़ाने की प्रवृत्ति होती है। इसलिए मिट्टी की अम्लता पर काबु पाने के लिए रासायनिक खाद के स्थान पर जैविक खाद, गोबर, केंचुआ खाद आदि का प्रयोग करना आवश्यक है। रासायनिक खाद के उपयोग से मिट्टी में सूक्ष्म खनिज तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है। इससे एक बार तो फसल उत्पादन बढ़ता है, लेकिन लम्बे समय तक इनके इस्तेमाल से खेतों में रासायनिक तत्वों की मात्रा इतनी बढ़ जाती है की जमीन बंजर होने लग जाती है।

बंजर भूमि के सुधार के उपाय :-

अभी तक हमने बंजर भूमि से जुड़ी मौजूदा दशाओं के बारे में चर्चा की है। अब हम बंजर भूमि को सुधारने या पुनः उपजाऊ बनाने के उपायों पर चर्चा करेंगे। जो इस प्रकार है :-

1. "हॉलोमिक्स" दवा से बंजर भूमि का उपाय :-

ICAR केन्द्रिय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के कृषि वैज्ञानिकों ने साल 2015-16 में ऐसे जीवाणुओं की खोज की जो बंजर भूमि को उपजाऊ बना देते हैं। इस जैविक फार्मूलेशन का नाम "हॉलोमिक्स" है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इसके इस्तेमाल से बंजर भूमि पर भी खेती करना संभव होगा।

2. बायोचार का उपयोग :-

मिट्टी की सेहत संवारने वाला सबसे सस्ता और आसान उपाय है बायोचार। बायोचार के इस्तेमाल से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है। जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि होती है। इससे किसानों की रासायनिक खाद पर निर्भरता तथा खेती की लागत घटी है। लिहाजा बायोचार को किसानों की आमदनी बढ़ाने का आसान एवं अहम जरिया माना गया है।

3. एलोविरा की खेती :-

बंजर या बेकार भूमि के लिए एलोविरा की खेती एक वरदान बन सकती है। इसकी व्यवसायिक खेती में प्रति एकड़ 10 से 11 हजार पौधे लगाने की लागत 18 से 20 हजार रुपये आती है। इससे एक वर्ष में 20 से 25 टन एलोविरा प्राप्त होता है, जिससे काफी मुनाफा हो सकता है। एलोविरा में ज्यादा सिंचाई, खाद एवं कीटनाशक की जरूरत भी नहीं होती है। इसका उपयोग कॉस्मेटिक उत्पादों के कच्चे माल के रूप में एवं औषधि के रूप में होता है।

4. बंजर भूमि पर बांस की खेती :-

बांस एक अद्भूत वनस्पति है। इसका उपयोग अनेक कार्यों में होता है। बांस की खेती अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के साथ-साथ बंजर भूमि वाले क्षेत्रों में भी की जा सकती हैं

5. बंजर भूमि पर अश्वगंधा की खेती :-

अश्वगंधा एक औषधिक गुणों वाला पौधा है। इसमें जल्दी से रोग नहीं लगता, ना ही इसे रासायनिक खाद की जरूरत पड़ती है। आवारा पशु भी इसे नुकसान नहीं पहुँचाते है। कृषि विशेषज्ञ ऐसी भूमि को अश्वगंधा के लिए सबसे उपयुक्त बताते है, जहाँ अन्य फसलें लेना लाभदायक नहीं होती है।

6. बंजर भूमि के लिए उपयुक्त फलदार वृक्ष :-

कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि बंजर भूमि में "आगर होल तकनीक" का इस्तेमाल करके आंवला, अमरूद, बेर, करौंदा आदि फलदार पेड़ों की खेती की जाये तो यह लाभदायक हो सकती है। लागत एवं आमदनी के पैमाने पर आंवला, करौंदा व अमरूद अच्छे विकल्प है।

7. रोशा घास की खेती :-

रोशा घास की खेती उपजाऊ, कम उपजाऊ, या 9 PH मान वाली उसर मिट्टी में भी हो सकती है। रोशा घास की बहुवर्षिय खेती में पारम्परिक फसलों की तुलना में लागत कम एवं मुनाफा ज्यादा है। भारत में सुगन्धित तेलों की उत्पादन में रोशा घास तेल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत रोशा घास का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

8. मेहंदी की खेती :-

कंकरीली, पथरीली, लवणीय, क्षारीय, परती, बंजर एवं अनुपजाऊ जमीन के लिए मेहंदी से शानदार फसल शायद ही कोई अन्य हो। जिनके पास सिंचाई के साधन नहीं हो तथा बार-बार नई फसल लगाने का झंझट नहीं करना हो तो मेहन्दी की फसल एक अच्छा विकल्प है। मेहन्दी का बागान 20 से 30 साल तक लाभप्रद रहता है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बंजर भूमि की समस्या धीरे-धीरे विकराल होती जा रही है। मानवीय गतिविधियों के कारण उपजाऊ भूमि भी बंजर व अनुपजाऊ हो रही है। जिसमें वनोन्मूलन, अत्यधिक पशुचारण, रासायनिक खाद का बढ़ता प्रयोग, अत्यधिक सिंचाई, भूमि का शोषण पर्यावरण प्रदूषण आदि मुख्य कारक है। अगर ऐसा ही होता रहा तो बंजर व अनुपजाऊ

भूमि के अनुपात में और अधिक वृद्धि होती जायेगी। जिसके कारण बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यानों की आपूर्ति करना मुश्किल हो जायेगा।

अतः यह आवश्यक है कि इस बंजर व अनुपजाऊ भूमि का उचित प्रबंधन किया जाये। इस बंजर भूमि को उपजाऊ व कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित करने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्तर पर सुदृढ़ प्रयास किये जाये। साथ ही ऐसी भूमि पर ऐसी फसलों के उत्पादन का प्रयास किया जाये जिनसे लाभ हो सके, जैसे – रोशा घास, मेहंदी, आंवला आदि। इस बंजर भूमि के उचित प्रबंधन एवं उपयोग द्वारा कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र में वृद्धि की जा सकती है। अतः बंजर भूमि के प्रबंधन एवं सुधार हेतु यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Agarwal, A.N. (1980), Indian Agricultural (Problems, Progress and Prospect), Vikas, New Delhi.
2. Bansal, P.C. (1977), Agricultural Problems of India, The Geographer, Vol. 27, Aligarh.
3. Adams, M.E. (1982), Agriculture extension in development Countries, Intl. Trop. Ag. Ser. London.
4. गुर्जर, आर. के. एवं जाट संसाधन एवं पर्यावरण, पंचशील प्रकाशन, बी. सी. (2006) जयपुर
5. Yadav, H.R. (1987) Wastelands and Diagnosis and Treatment Concept, New Delhi.
6. शर्मा, बी. एल. (1984), कृषि भूगोल, साहित्य भवन, आगरा।
7. Sing, Abha Laxmi (1985), The Problem of Wastelands in India, B.R. Publishing Corporation, New Delhi.